

जाड़े का एक जादू

भूमध्यसागर का एक गर्म शहर, इतालवी सीमाओं के भीतर, इकसठ सालों तक मुझे बसाए रहा था: एक बेचैन शरीर अपने असली आयाम की तलाश में, और एक मन जो पहले से अमेरिका में जी रहा था।

मेरा अमेरिका। वह जो हर बार झंडे को देखते ही मुझे रुला देता, मेरी धड़कन को असंभव तरीकों से तेज़ करते हुए। वह जो एक दिन मुझे बसाएगा, अपनी धरती की गहराईयों में मेरा स्वागत करने के लिए प्रतीक्षा करते हुए।

वह उसी दिन था जब मुझे अपनी चाची का फोन आया। उसने बताया कि मेरे दादा-दादी गुज़र गए हैं। बुढ़ापा।

तीन सौ किलोमीटर हमें अलग करते थे, पर कुछ भी और कोई भी मुझे रोक नहीं सकता था। मैं अपनी कार में बैठा और चला। चार घंटे बाद, मैं पहुँचा।

घर बंद था। एक पड़ोसन ने, जैसे ही मुझे देखा, मेरा स्वागत किया, और मुझे कॉफ़ी के लिए अंदर बुलाया। पर मेरा समय वह नहीं था।

मेरे पास हमेशा घर की चाबियाँ थीं। फ्रेगा परिवार का एक खास गुण: समस्या को रोकना हमेशा समाधान ढूँढ़ने से बेहतर होता है। यही हम थे।

मैं अंदर गया। मैं अभी भी घर की, कमरों की, अलमारियों की, रसोई की, और उस चिमनी की महक महसूस कर सकता था जिसने 1977 की सर्दी में मेरा साथ दिया था, जब मैं केवल बारह साल का था। जो कुछ जा चुका था वह अब वहाँ नहीं था। पर स्मृतियाँ अभी भी वहाँ थीं।

सहज प्रवृत्ति ने मुझे अटारी की ओर खींचा।

दो छोटे चूहों ने मेरा स्वागत किया। बिल्कुल भी डरे हुए नहीं। वे वहाँ ऐसे थे गोया मेरा इंतज़ार कर रहे हों, जैसे उन्हें मुझे किसी चीज़ की ओर ले जाना हो।

उन्होंने मुझे एक कार्डबोर्ड सूटकेस तक पहुँचाया, बंद, धूल की मोटी परत से ढका हुआ।

जिज्ञासा ने मुझे उसे खोलने पर मजबूर किया। दोनों चूहे संतुष्ट लग रहे थे, जैसे उन्होंने एक काम पूरा कर लिया हो।

अंदर, मुझे एक नोटबुक मिली।

एक अनोखी लिखावट, सब कैपिटल अक्षरों में, अद्वितीय। यह मेरे पिता की थी।

एक कहानी में एक तारीख थी: 21 फ़रवरी 1955। संयोगवश, ठीक मेरे जन्म का दिन — केवल साल अलग था। उन्होंने वे पंक्तियाँ मेरे दुनिया में आने से दस साल पहले लिखी थीं।

वे भगवान को लिख रहे थे।

उन्होंने एक परिवार, एक पत्नी और बच्चे माँगे। और एक ख़ास: एक बेटा। वे उसका नाम फेर्दिनान्दो रखते, अपने पिता की तरह। पर उनका अनुरोध वहीं ख़त्म नहीं होता था।

मैं तीव्रता से रोने लगा। मुझे नोटबुक गीला करने का डर था, इसलिए मैं बिना आँसूओं के सिसकने के तरीके पर आ गया। वह जो मैं जीवन में केवल स्त्रियों की उपस्थिति में इस्तेमाल करता था — उन्हें आत्मसमर्पण कराने के मेरे तरीकों में से एक, धोखा देने के मेरे तरीकों में से एक। मैं फ्रेगा हूँ।

वे अपने बेटे को कैसा चाहते थे इसका विवरण विस्तृत था। और, बिना ज़्यादा खींचे, अंत में मैं खुद को वहाँ पाता हूँ। मैं कौन हूँ।

और यह उन पलों में से एक था जब मैंने खुद से एक सवाल पूछा:

मेरे पिता कौन थे?

वंशावली ने बाकी काम कर दिया। क्योंकि उस सवाल के साथ, मेरे उपनाम के साथ, मैं जो हूँ उसके साथ, आज लोग हमेशा वही चीज़ पूछते हैं: क्या फ्रेगा असली हैं, या वे धोखेबाज़ हैं? दोनों में से थोड़ा-थोड़ा। हम फ्रेगा हैं।

मेरे पिता ने भगवान से एक बेटा माँगा। भगवान ने अनुरोध स्वीकार किया। पर डिलीवरी ग़लत हो गई। मॉडल अमेरिकी था। यह इटली पहुँच गया।

नान्दो

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com